कृषि नवाचार
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 02 भाग 02 मई, 2025

कृषि में महिलाओं की भूमिका: बाधाओं को तोड़ती महिलाएं

राघवेंद्र सिंह[1*], चंद्र शेखर प्रजापति[2] और साक्षी यादव[3]

[1]स्नातकोत्तर शोधकर्ता, कृषि प्रसार और संचार विभाग, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय मेरठ, उत्तर प्रदेश

[2]सहायक प्रोफेसर, कृषि और प्राकृतिक विज्ञान संस्थान, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

[3]स्नातकोत्तर शोधकर्ता, कृषि अर्थशास्त्र विभाग, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय मेरठ, उत्तर प्रदेश

***E-mail: raghavendrasingh854@gmail.com**

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ कृषि न केवल अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, बल्कि लाखों लोगों की आजीविका का मुख्य स्रोत भी है। इस क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, लेकिन अक्सर अनदेखी रह जाती है। आज समय आ गया है कि हम "कृषि में महिलाओं की भूमिका" को न केवल समझें, बल्कि यह भी स्वीकार करें कि वे कैसे पारंपरिक सीमाओं को तोड़ रही हैं और इस क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन ला रही हैं।

पारंपरिक भूमिका

परंपरागत रूप से महिलाएं खेतों में बीज बोने, निराई-गुड़ाई, कटाई और फसल संग्रहण जैसे कार्यों में लगी रहती हैं। ग्रामीण भारत में, एक बड़ी संख्या में महिलाएं प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कृषि कार्यों में संलग्न हैं। हालांकि, उनके कार्यों को अक्सर "सहायक" या "गैर-पेशेवर" माना जाता है, जिससे उनका योगदान अदृश्य रह जाता है।

शिक्षा और प्रशिक्षण की भूमिका

हाल के वर्षों में शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से महिलाएं कृषि में नेतृत्वकारी भूमिका निभाने लगी हैं। आधुनिक कृषि तकनीकों, जैविक खेती, पशुपालन, डेयरी फार्मिंग और कृषि विपणन जैसे क्षेत्रों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी बढ़ी है। कई महिला किसान अब खेतों की मालिक भी हैं और कृषि उत्पादन में नवाचार ला रही हैं।

महिला किसान: उद्यमिता की मिसाल

कई महिला किसान आज कृषक-उद्यमी के रूप में उभर रही हैं। वे न केवल खुद की जमीन पर काम कर रही हैं, बल्कि कृषि आधारित स्टार्टअप्स, स्वयं सहायता समूहों और किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) के माध्यम से आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो रही हैं। उदाहरण के तौर पर महाराष्ट्र की कुछ महिला सहकारी समितियां जैविक उत्पादों का निर्माण और विपणन कर रही हैं, जिससे स्थानीय और वैश्विक बाजार में पहचान बना रही हैं।

चुनौतियाँ और बाधाएँ

महिलाओं को कृषि में आगे बढ़ने से कई सामाजिक, आर्थिक और संस्थागत चुनौतियाँ रोकती हैं, जैसे कि भूमि पर स्वामित्व की कमी, वित्तीय संस्थाओं तक सीमित पहुँच, तकनीकी प्रशिक्षण का अभाव, और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ। इसके अलावा, नीति निर्धारण स्तर पर भी महिलाओं की भागीदारी बहुत कम है, जिससे उनकी समस्याएँ अनसुनी रह जाती हैं।

बदलाव की ओर

सरकार और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए विभिन्न योजनाएं चलाई जा रही हैं, जैसे राष्ट्रीय कृषि विकास योजना, महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना आदि। डिजिटल माध्यमों, मोबाइल ऐप्स और प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से उन्हें नवीनतम जानकारी और संसाधनों से जोड़ा जा रहा है।

"कृषि की सफलता तभी संभव है जब उसकी जड़ों में महिलाओं का समर्पण और नेतृत्व हो।"

भारत में कृषि क्षेत्र में महिलाओं की सक्रिय भूमिका और उनके द्वारा पारंपरिक सीमाओं को तोड़ने के प्रयासों को दर्शाती हैं:

1. **यमुना कुमारी– झारखंड की नवाचारशील महिला किसान:** 23 वर्षीय यमुना कुमारी, रांची के पास बेरो गाँव की निवासी हैं। उन्होंने पारंपरिक खेती को वैज्ञानिक तकनीकों के साथ मिलाकर एक नई दिशा दी

है। 2021 में "मिलियनेयरफार्मर डेवलपमेंट प्रोग्राम" से जुड़ने के बाद, उन्होंने ड्रिप सिंचाई, पॉलीहाउस, और कीट प्रबंधन जैसी तकनीकों को अपनाया। स्ट्रॉबेरी, बैंगन और गेंदा फूल जैसी उच्च मूल्य वाली फसलों की खेती करके उन्होंने अपनी आय को रु.10-11 लाख वार्षिक तक बढ़ाया। **(द टाइम्स ऑफ़ इण्डिया)**

2. **ड्रोन दीदी-वाराणसी की तकनीकी सशक्त महिलाएं:** वाराणसी में "ड्रोन दीदी" नामक महिलाओं का एक समूह कृषि में ड्रोन तकनीक का उपयोग करके खाद और कीटनाशकों का छिड़काव कर रहा है। इन महिलाओं ने प्रोफेसर जयशंकर तेलंगाना स्टेट एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी की ड्रोन अकादमी से प्रशिक्षण प्राप्त किया और अब तक 2,581 एकड़ भूमि पर सेवाएं प्रदान की हैं, जिससे उन्होंने दस महीनों में रु. 3,38,500 की आय अर्जित की है। **(द टाइम्स ऑफ़ इण्डिया)**

3. **मंत्रवती –इटावा की स्ट्रॉबेरी किसान:** उत्तर प्रदेश के इटावा जिले की मंत्रवती ने स्ट्रॉबेरी की खेती करके कृषि में नवाचार का परिचय दिया है। आजीविका मिशन के सहयोग से उन्होंने इस नई फसल की खेती शुरू की और सालाना रु. 80,000 की आय प्राप्त की। उनके इस प्रयास के लिए उन्हें राज्य सरकार द्वारा दो बार सम्मानित किया गया है। **(लाइव हिन्दुस्तान)**

4. **जल सहेलियाँ– बुंदेलखंड की जल योद्धाएं:** बुंदेलखंड क्षेत्र की 'जल सहेलियाँ' नामक महिलाओं का समूह जल स्रोतों के पुनर्जीवन के लिएकार्यरत है। 2005 में स्थापित यह समूह अब तक 200 गाँवों में जल संकट को दूर करने में सफल रहा है। इन महिलाओं ने स्थानीय पंचायतों के साथ मिलकर जल संरक्षण के प्रयास किए हैं, जिससे कृषि उत्पादकता में वृद्धि हुई है। **(विकिपीडिया)**

5. **सखी मिल्क प्रोडक्शन कंपनी–राजस्थान की महिला डेयरी उद्यमिता:** राजस्थान की ग्रामीण महिलाओं द्वारा स्थापित 'सखी मिल्क प्रोडक्शन कंपनी' ने डेयरी उद्योग में महिलाओं की सशक्त भूमिका को दर्शाया है। यह कंपनी दूध संग्रहण, गुणवत्ता नियंत्रण, और विपणन के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बना रही है। **(वेब प्रकाशन)**

6. **मुजफ्फरपुर की महिलाएं– मधुमक्खी पालन में आत्मनिर्भरता:** बिहार के मुजफ्फरपुर जिले की अजीतपुरहरपुर गाँव की महिलाओं ने मधुमक्खी पालन का व्यवसाय शुरू करके अपनी आजीविका को सुनिश्चित किया है। पहले ये महिलाएं अस्थायी कृषि मजदूर थीं, लेकिन अब उन्होंने स्थायी आय का स्रोत स्थापित किया है। **(एफएओ होम)**

7. **हिमाचल प्रदेश – महिला नेतृत्व वाले कृषि फार्म:** हिमाचल प्रदेश के मध्य पहाड़ी क्षेत्रों में महिलाएं कृषि फार्म का नेतृत्व कर रही हैं। उन्होंने पारंपरिक कृषि पद्धतियों को अपनाकर और विविध फसलों की खेती करके अपने खेतों को सतत और लाभकारी बनाया है। **(एल ई आई एस ए इंडिया)**

कृषि क्षेत्र में महिलाओं के योगदान को पहचानने और सम्मानित करने तथा उनके सामने आने वाली अनूठी चुनौतियों का समाधान करने के लिए हर साल 4 दिसंबर को कृषि में राष्ट्रीय महिला दिवस (National Day of Women In Agriculture) मनाया जाता है। यह दिन आम तौर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) और भारत भर के अन्य कृषि संगठनों द्वारा आयोजित किया जाता है।

निष्कर्ष

महिलाएं अब सिर्फ खेतों में श्रमिक नहीं, बल्कि परिवर्तन की अग्रदूत बन रही हैं। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि अगर उन्हें समान अवसर, संसाधन और सम्मान मिले, तो वे कृषि क्षेत्र को नई ऊँचाइयों तक ले जा सकती हैं। आज आवश्यकता है कि हम सामाजिक सोच में बदलाव लाएँ, और महिला किसानों को वह मान्यता दें जिसकी वे सच्चे रूप से हकदार हैं। भारतीय महिलाएं कृषि क्षेत्र में न केवल सक्रिय भूमिका निभा रही हैं, बल्कि नवाचार और नेतृत्व के माध्यम से पारंपरिक बाधाओं को भी तोड़ रही हैं। उनकी ये सफलताएं अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं और यह सिद्ध करती हैं कि उचित समर्थन और संसाधनों के साथ महिलाएं कृषि में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकती हैं।